# सत्यमेव जयते नानृतम्

'सत्यमेव जयते नानृतम्–ए अथर्ववेदना मुण्डकोपनिषद मांनु (३-१-६) वाक्य घणा खरा जाणे छे, एमांनो पहेलो भाग स्वतन्त्र भारतनुं ध्येय वाक्य तरीके पण चुंटायो छे। ए श्रुति वाक्य नो अर्थ सत्यनोज (सदा) जय जूठानो नहीं। एवो आज सुधी लेवा आव्यो छे।

पण उपनिषद मां जे संदर्भ माँ ए वाक्य आव्युं छे ते जोतां उपरनो अर्थ योग्य नथी एम लागे छे, ए अर्थ करती वखते 'सत्यम्' अने 'अनृतम्' ने वाक्य ना कर्ता लेवामां आव्या छे, पण ते योग्य न थी। ए वाक्य मां 'सत्यम्' (अने अनृतम्) ए कर्म रोई ऋषि ने कर्ता तरीके स्वीकारवानो छे। एम करतां ए वाक्य नो अर्थ आवो थशे 'ऋषि सत्यज मेलवे छे, अनृत मेलवतो नथी'। उपनिषदो मां ऋषि मुनिओ नुं ध्येय ब्रह्म प्राप्ति करवा नुं छे, अने ए ब्रह्म एटलेज अन्तिम सत्य (सत्यस्य सत्यम्)। अहिंया सत्य ए साध्य छे, ए सत्य करतां जे जुदुं होय ते बधुं अनृत गणाय, ए साध्य थई शकतुं नथी। ब्रह्म ना सत्य अने असत्य रूपो विशे में –उपनिषद मां अनुवाक्य छे—द्वे वाव ब्रह्मणो रूपे मूर्तं च अमूर्तं च। अथ यन्मूर्तं तद असत्यम्, यद्मूर्तं तत् सत्यम्। तद् ब्रह्म तज्ज्योतिः मैत्रि ६,३। जर्मन तत्वज्ञ Deusseu पण 'सत्यमेव जयते' नो आनोज अर्थ करे छे –Wahiheit Crisicgter (ie.ativadm cf. Chandh. 16) nieht unwebrheit" अपर श्रुति वाक्यनो नवो आपेलो अर्थ स्पष्ट थाय तेटला माटे मुण्डकोपनिषद मांना बे श्लोक जोवुं ठीक थशे—

सत्येन लभ्यस्तपसा ह्येष आत्मा सम्यक् ज्ञानेन ब्रह्मचर्येण नित्यम्।
अन्तः शरीरे ज्योतिर्मयो हि शुभ्रो यं पश्यंति यतयः क्षीण दोषाः॥
सत्यमेव जयते नानृतं सत्येन पन्था विततो देवयानः।
योनाक्रम वृन्त्यृषयो ह्याप्तकामा यत्र न तत्सत्यस्य परमं निधानम्॥ (३,१ ५–६)

आमांनां पहेला श्लोक मां सत्यना गणतरी तप, सम्यक्ज्ञान, वगैरे साधनो मां करी छे, अने तेवडे आत्म प्राप्ति थाय छे एम कह्युं छे। अने बीजा श्लोक मां एम कह्युं छे के जे देवयान थी ऋषिओ जाय छे ते सत्य थी वितत छे अने आखरे ते सोज्यां पहोंचे छे ते सत्यनुं परम निधान छे[1]। तेथी श्लोक ना आरंभ मां आवतां 'सत्यमेव जयते' ए श्रुति वचन मां सत्य एटले व्यावहारिक सत्य अने ए वचन नो लौकिक दृष्टिए करेलो अर्थ 'सत्यनोज सदा जय थाय छे' एवो अर्थ करवो योग्व लागतुं नथी, ऋषि आखरे ज्यां पहोंचे छे त्यां

---

१. ऋषि जे मार्ग वडे जाय छे तेनुं वर्णन मुण्डक मां जेम सत्येन पन्था विततो देवायानः' एवुं कर्युं छे तेम वृहदारण्यक मां (४.४.९) मार्ग विशे एष पन्था ब्रह्मणह अनुक्तिः तेन एति ब्रह्मविन....एम कह्युं छे। आ बन्ने वाक्यो छेक समानार्थक न थी तो ए तेपर थी मुण्डकमांना उपला श्लोक मां सत्य ए ब्रह्म ना अर्थ मां छे ए जणाई आवशे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मात्र सत्य होवाथी उपरना वाक्य नो अर्थ ऋषि सत्यतेज मेलवे छे' एम लेवो जोइये । ऋषि अनृत के बीजा लोको मेलवतो नथी, कारण ऐनुं ए साध्य नथी ।

आ नवा अर्थनी योग्यायोग्यता तपासवा माटे उपनिषदोमां 'सत्यं' अने'जी' ए शब्दो तो वापर केवी रीते करवामां आव्यो छे ए जोवूं ईष्ट गणाय । एमांथी ब्रह्म एटलेज अन्तिम सत्य ए सिद्धान्त उपनिषदो मां अनेक ठेकाणे मूकवामां आव्यो छे । छांदोग्यमां उद्दालक आरुणीए श्वेतकेतु ने जे आत्मैक्य नी शीखामण आपी तेमां आ बधी चराचर सृष्टिी नो जे आत्मा तेनेज सत्य कह्युं छे, रसयः एष अणिमा, ऐ तदा त्वमिदं सर्वम् तत् सत्यं, स आत्मा तत् त्वम् आमे श्वेतकेता (६,८-१६) ए शीखामण आपता पहेलां आरुणीए श्वेतकेतू ने जे प्रश्न पूछ्यो तेनो थोडो उकेल करती वखते पण 'सत्य शब्द मूलभूत सत्य ए अर्थ माँ वपरायो छे (एकेन मृत्पिन्डेन सर्वं मृन्मयं विज्ञातं स्यात् वाचारम्भणं विकारो नामधेयं मृत्तिका इत्येव सत्यम् ।···लोहम् इत्येव सत्यम् ।······विगेरे ६.१) । एज उपनिषदमां आगल ब्रह्मनुं नाम सत्य एवूं स्पष्ट रीते कह्युं छे (तस्य ह्वा एतस्य ब्रह्मणो नाम सत्यम् इति । ८,३) जे मुण्डक मां 'सत्यमेव जयते' ए वाक्य छे ते मां पण ब्रह्म विद्यानुं स्वरूप कहेती वखते 'अक्षर पुरुष एज सत्य' एम कह्यं छे (योनाक्षरं पुरुष वेद सत्य प्रोवाच तां तत्वतो ब्रह्मविद्याम् । १.२.१३ तेमज, तद् एनद् अक्षर ब्रह्म ··· तद् एनत् सत्यं, तद् अमृतं ··· (२.२.२.) एजे आखरी सत्य कां तो ब्रह्म तेना पर आदित्य रूप सोनानुं ढांकणुं होई ते दूर कर्या पछी सत्य जोई शकाय छे एनुं केटलाक ठेकाणे वर्णन छे (हिरण्यमयेन पात्रेण सत्यस्यापिहितं मुखम् । तत् त्वं पूषन् अपावृणु सत्य धर्मपि दृष्टये ।। ईशा० १५ बृह० ५१५) । 'सत्यमेव जयते' ए वाक्यमां सत्यने कर्ता तरीके लेतां पहेलां एक बात ध्यान माँ राखवी जोइए ते एके सत्य ए ब्रह्मनुं एक अभिधान होवा थी उपनिषद मां सत्यने कयांय कर्तृत्व आपवामां आव्युं नथी । बृहदारण्यक माँ एक ठेकाणे (५.५.१.) सृष्टी ना उत्पत्ति नुं वर्णन करती वखते आवा वाक्यो छेः आपः एव इदम् अग्रे आसुः । ताः आपः सत्यं असृजन्त, सत्यं ब्रह्म. ब्रह्म प्रजापति प्रजापति देवान्······। आ वाक्यो उपर उपर जोतां पहेला तो एम लागे के अहियां सत्य ने ब्रह्म उत्पन्न करवानुं कर्तृत्व आपवामां आव्युं छे पण वस्तुस्थिति तेवी नथी । आना पहेला नां खड मां (५.४) सत्य एटलेज जे ब्रह्म ते 'प्रथमज' होवानुं कह्युं छे (सयोर एतं महद्यक्षं प्रथमजं वेद सत्यं ब्रह्म इति······) आ पर थी ए स्पष्ट थशे के उपरनां वाक्यो मां 'सत्यंब्रह्म ए शब्दो मां सामानाधिकरण्य छे । अने तेनो अर्थ पाणी ए सत्य उत्पन्न कर्युं''। ए सत्य एटलो ब्रह्म, ब्रह्मा ए प्रजापति, प्रजापति ए देवो ने उत्पन्न कर्या एवो लेवानो छे।

उपनिषदो मां बधेज ठेकाणे सत्य एटले ब्रह्म एवो अर्थ होय छे एतूं सूचन करवानो हेतु न थी । केटलेक ठेकाणे सत्य एटले 'साचुं' बोलवुं' एवो व्यावहारिक अर्थ पण होय छे दाखला तरीके वेदाभ्यास पूरोथाय पछी गुरु ए शिष्य ने जे उपदेश करवाने होय छे तेमां 'सत्यंवद । ·· सत्यान्न प्रमदितव्यम्' (तैति १.११ १) एवा वाक्यो छे छांदोग्य माँ (१.२,३.) पण कह्युं छे 'तस्मात् तया (× वाचा) उभय वदनि सत्यं च अनृतम् च, कोई के चोरी करी छे के नहीं ए बाबत मां चुकादो आपवा माटे तप्त परशु नो जे प्रख्यात दाखलो छे तेमां पण आवा प्रसंगे जेना हाथ दभाय ते अनृताभि संधी अने जेनो हाथ न दभाय ते सत्याभि संधी एवो निर्णय कर्यो छे (छांदोग्य ६- ६). आँखे जोएलुं ते सत्य काने सांभले लुं नहीं; आ सत्य अत्मवार व्यावहारिक सत्य होई ते बस प्रतिष्ठित होय छे । एम बृहदारण्यक कहे छे । चक्षुर्वै सत्यम् ।····तस्माद् पद इदानीं द्वौ विवद्मानौ एयाा ताम्, अहम् अदर्शम्, अहम् अश्रौषम् इति, यो एवं ब्रूयात् अहम् अदर्शम् इति, तस्मै एव श्रद्दध्याय (५.१४.४) ब्रह्म मेलववाना साधनो माँ ज्यारे सत्यनी गणत्री होय छे त्यारे त्यापण

Jain Education International          For Private & Personal Use Only          www.jainelibrary.org

सत्य एटले लौकिक सत्य अभिप्रेत होय छे। उपर आपेला मुण्डकमांना श्लोक मां सत्य, तप, सम्यज्ज्ञान अने ब्रह्मचर्य ए चार आत्म प्राप्ती ना साधनो कह्या छे। एमां ना सत्य अने तपनो उल्लेख श्वेताश्वतर मां पण छे (सत्येन् एव तपसा योऽनुपश्यति। १.१५) ए सिवाय साधन विषयक बीजुं वाक्य : तस्माद् विद्या तपसा चिन्तया च उपलभ्यते ब्रह्म। (मैत्रि. ४-४ विगेरे) ब्रह्म प्राप्ति ना ए साधनो नी उत्पत्ति अक्षर ब्रह्म थी ज थई छे (तस्माच्च देवाः बहुधासं प्रसूताः तपश्च श्रद्धा सत्यं ब्रह्मचर्य विधिश्च। (मुण्डक २.१.७) प्रश्नोपनिषद् मां क्या साधनो ब्रह्म लोक मेलवण माटे सफल थाय छे अने क्या थता नथी ए स्पष्ट रीते बताव्युं छेः तेषान् एव ब्रह्मलोको येषां तपो ब्रह्मचर्य, येषु सत्य प्रतिष्ठितम्।....न येषु जिह्मम् अनृत् न माया च इति। १.१५.६ तेमज मुण्डक मां (३.२.३) नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यो न मेधया न बहुना श्रुतेन-एम जणाव्युं छे। पण आपणे जे वाक्यनो अर्थ करवो छे ते श्लोक मां ऋषि आखरे क्यां जई पहुंचे छे ते कह्युं होवाथी सत्यनो अर्थ ब्रह्म लेवो पटे, साचुं बोलवुं ए नथी।

उपनिषदो मां 'सत्य' शब्द ना जे प्रयोगो छे ते जोया पछी आपणे 'जी' शब्द ने लईये। छेक ऋग्वेद थी मांडा ए धातूना मेलववुं, प्राप्त करवुं 'तेमज' जीतवुं विजय मेलववो एवा बन्ने अर्थो संभवे छे। उपनिषदो मां पण 'एकाद वस्तु मेलववी। ए अर्थ जी धातूनो प्रयोग जोवा मां आवे छे 'लोके जयति' के संलोकतां जयति—एवा प्रयोगो उपनिषदो मां घणीवार आवे छे-तंतं लोके जयते तांश्च कामान्' एम मुण्डक मांज (३.१.१०) कह्युं छे, अने त्यां 'जयते' नो मेलवे छे, प्राप्त करे छे एज अर्थ ए चोक्खुं छे। आ वाक्य मां आवतां 'कामान् जयते' ने बदले छांदोग्य मां आवता 'आप्नोति सर्वान् कामान् (७.१०) ए शब्दो पण एज वस्तु बतावे छे। सामविषयक गूढार्थना उकेल करता बखते एकवीस अक्षरो वडे आदित्य प्राप्ति थाय छे। अने बावीसमा अक्षरे आदित्यमी जे पर छे ते मले छे ए करती बखते 'जयति' अने 'आप्नोति' ना जे प्रयोगो छे ते परथी आ हकीकत वधारे स्पष्ट थाय छेः एकविंशत्या आदित्यम्' आप्नोति'।....द्वाविंशेन परम् आदित्यात् जयति तत्नाकम् तद् विशोकम् (छां.२.१०.५.)। ए पर थी 'सत्यमेव जयते' ए वाक्य मां 'सत्य' एटले 'अंतिम सत्य' अथवा 'ब्रह्म' अने जयते 'मेलवे छे' एवा अर्थो लेवा मां कोई वांधो न थी ए वस्तु ध्यान मां आवशे।

'सत्यमेव जयते'—ए श्रुति वाक्य पर श्रीशंकराचार्य लखेछेः सत्यमेव सत्यवान एव जयते जयति, न अनृतं न अनृतवादी इत्यर्थः। नहि सत्यानृतयोः केवलयोः पुरुषानाश्रितयोः जयः पराजयोवा संभवति। प्रसिद्धं लोके सत्यवादिना अनृतवादी अभिभूयते न विपर्यय-। अतः सिद्धं सत्यस्य बलवत्साधनत्वम्। एपर थी आचार्य श्री वेपण मात्र सत्य तरफ कर्तृत्व आपवामां अडचण लागी अने तेथी तेमणे सत्यम्—सत्यवादी पुरुष एवो अर्थ लीधो। पण तेम छता एमणे सत्यने वाक्य नो कर्त्ता मान्यो अने जयते नो अर्थ जयथाय छे एवो लीधो तेथी उपर ना वाक्यनो 'सत्यनोज सदा जय थाय छे। एवो लौकिक अर्थ एमने अभिप्रेत छे। एमना मतव्य प्रमाणे एम कहेवानु" कारण सत्यनी उत्तम साधन तरीके प्रशंसा करवी एछे। पण एनी जरूर गणाती न थी। कारण आ उपनिषद जे ऋषिओने अक्षर प्राप्ति तत्व ज्ञान रूप जे पराविद्या तेथी थई शके छे। लौकिक जय के पराजय ए बधुं अपराविद्या मां आवी शके, ते मुण्डको[1] ने केटला उपनिषत् मां स्थान न थी। ए उपदेश ग्रहण

---

१. मुण्डक उपनिषद मां आपेला ब्रह्मविद्या माथानुं मुण्डन करी अरण्य मां रहेवारा ओ माटे हती एवुं तेषामेव एतां ब्रह्मविद्या वदेन शिरो व्रतं विधिवत् पैस्तु चीर्णम् [३, २, १०] ए वाक्य परथी लागे छे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

करी वन मां रहेता आप्तकाम ऋषिओने 'सत्यनोज सदा व्यवहार माँ जय थाय छे'—ए बात कहेवानी जरूर नथी) तपः श्रद्धेयोह्युप वसन्त्यरण्ये शान्ता विद्वांसो भैक्ष चवं चिरन्तः (१२,११); आ उपदेश देनार अने लेनार गुरु शिष्यनुं वर्णन पण अमे भेवुं (१, २, १२–१३) एकंदरे मुण्डक उपनिषद् मां आपेलुं तत्व ज्ञान अने त्या आवतुं साध्य साधकोनुं वर्णन जोतां 'सत्यमेव जयते' नो अर्थ ऋषि सत्य–(ब्रह्म) तेज मेलवे छे' एवो अर्थ उचित थशे ।

आ विवेचन सामे थोडाक आक्षेपो मूकवा शक्य छे, पहेलो आक्षेप एवो छे के 'जी' धातुनो जो परस्म पदे उपयोग कर्यो होय तो कर्मनी अपेक्षा रखाये ।[1] पण उपरना वाक्य मां 'जयते' एवो आत्मनेपदे उपयोग होवा थी कर्मनी अपेक्षा न थी अने तेथीज ए वाक्यनो 'सत्यनोज जय थाय छे' एवो अकर्मक अर्थ लेवामां आव्यो छे । आ बन्ने प्रयोगोनुं उदाहरण तरीके ऐतरेय ब्राह्मणमांनुं (१२.६) एक वाक्य आपी शकाय । 'यजमान .....जयति स्वर्गलोकं, व्यस्मिन् लोके जयते' । आ आक्षेपनो परिहार एम करी शकाय । पहेली बात एवी के आत्मने पदमां थतां प्रयोगोहमेश कर्म निरपेक्ष होय छे एवुं न थी । मुण्डकमांज आवता 'पश्यते' ना सकर्मक उपयोग जोवा: यदा पश्यः पश्यते रुक्मवर्णकर्तारं ईशं पुरुषं ब्रह्मयोनिम् (३, १, ३) अने 'ततस्तु तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः (३, १, ८) । बीजी बात एवी के 'जयते' नोज सकर्मक उपयोग मुण्डकमां छेः ततं लोकं जयते ताश्च कामान् । ३, १, १० । परन्तु खरे खर जोतां तो श्रुति वाक्य मां 'सत्यमेव जयति' ने बदले सत्यमेव जयते' एवो प्रयोग करवानुं कारण मुण्डकमां वपरायेला छंद मां छे । जर्मन पंडित हेर्टले[2] एमना मुन्डकोपनिषत परना पुस्तकमां ए छंदनु जे विवेचन कर्युं छे ते पर थी (पा० २८) एम स्पष्ट थाय छे के आ उपनिषद् मां आवता त्रिष्टुभ मां ज्या पादनो पहेलो अवयव चार अक्षर नो अने वचलो अवयव त्रण अक्षर नो होय छे त्यां वचता अवयव ना त्रणे अक्षरे कदे लघु होता नथी । अने तेथीज 'सत्यमेव जयति' अने तंतंलोक जयति' ने बदले 'सत्यमेव जयते' अने तंतंलोकं जयते एवा प्रयोग थया छे । तेथी अहियां 'जयति' एवो परस्मैपद मां उपयोग गृहीत—'सत्यं' ने कर्म लेवामां कोई बांधो न थी । हेर्टलना मानवा प्रमाणे तो आ श्लोकना पहेला पदमां शेवटनुं अक्षर नीकली गयुं छे । आपाद छंदनी दृष्टि ए एकाक्षर थी न्यून तो छेज, तेथी हेर्टल श्लोकनी पहेली लीटी एम वांचे छे सत्यमेव जयते, नानृतं सः, सत्येन पन्था विततो देवयानः । (पा० ५९ अने ४४) 'एम कर्युं होयतो 'सः' ए कर्ता अने 'सत्यं' ए कर्म ए चो करवी बात छे । हेर्टलेने आ वाक्यनो निश्चित थयो अर्थ अभिप्रेत हतो ए समजवा मार्ग नथी । पण उपनिषद् मां एमणे सूजवेली दुरुस्ती मान्य राखवी होय तो ए वाक्यमां 'सत्यं' मानवुं केम घटे छे ते उपर जणाव्यु छेज ।

बीजो आक्षेप एवो के श्लोकना पहेला पादमां 'जयते' एवो एक वचन माँ प्रयोग होवाथी ऋषि ए एक वचनी कर्ता मानवानो छे पण बीजा पादमां तो ऋषयः आक्रयन्ति' आवो बहुवचन मां प्रयोग छे तेथी पहेला पादमां एक वचनी कर्ता अव्याहृत न मनाय । आक्षेपनुं पण उत्तर आपी शकाय एम छे । आवी जात ना वचन विरोध बीजे ठेकाणे पण जोवा मलं छे । दाखला तरीके मुण्डकमानां नीचेना श्लोक जोवा :

सवेद एतत् परमं ब्रह्मधाम यत्र विश्वं निहितं भातिशुभ्रम् ।
उपासते पुरुषंयसे ह्यकामास्ते शुक्रप् एतद अतिवर्तन्ति धीराः ॥३, २, १

---

१. अे के आक्षेप एकदम खरोनथी । "भारतीकवेर्जयति" जेवा प्रयोग पण मलं छे ।

२. Johannes Hertal—Mundka Upnisad—kritisehe Ausgabe, leipsig 1924.

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एतैद उपायैर यतते यस्तु विद्वान् तस्य एष आत्मा विशत ब्रह्म धाम ।
संप्राप्य एनम् ऋषयो ज्ञान तृप्ताः कृतात्मानो वीतरागाः प्रशान्ताः ।।३–२–४–५।।

एक बीजा आक्षेप एवो के उपनिषदो मां 'ऋषिःब्रह्म जयति' एवो प्रयोग मलतो नथी। आबात साची छे। पण जयतिने बदलेई सत्यम् इविद् इसाय् ईसथ क्रियापदोना उपयोग नीचे ना वाक्यो मां जोवा जेवा छेः सत्येन लभ्यः..... आत्मा (मु० ३–१–५) नायामात्मा प्रवचनेन लभ्यः (मु० ३–२–३) तस्माद् विद्यया....... उपलभ्यते ब्रह्म (मैत्रि ४–०) ब्रह्मचर्येण आत्मानाम् अनुविन्दते (छा–८–५) ब्रह्म प्राप्तः (कठ–६–१८) अत्र ब्रह्म समश्नुते (कठ ७–१४ वृह० ४–४७), 'जयति' विशेषण उपर छां–२–१०–५–६ मानुं साहित्यनी प्राप्ति अने साहित्य थी जेपर छे तेनी प्राप्ति तिथेनुं वाक्य टांकी शकायः एव विंशेन आदित्यम् आप्नोति .....द्वाविंशेन परम् आदित्या ज्जयति। एक ठेकाणे साहित्यनुंज अंतिम ध्येय जे ब्रह्म तेंना साथ ऐक्य गणीतेनी प्राप्ति विशें 'जयति' नो उपयोग कर्यो छे। प्रश्न १–१० मां एम लखायुं छेः अथोत्तरेण तपसा ब्रह्मचर्येण श्रद्धया विद्यया आत्मानम् अन्विष्य आदित्यम् अभिजयन्ते। एतद्वै प्राणानाम् अपतनय एतद् अमृतम् अभयम् एतद् परायणम् एतस्यान्न पुनरावर्तना इति। आ वाक्यमां पहेलां आत्माना अन्वेषणना साधनो आप्या छे। अनेते पछी तरतज आदित्यम् अभिजयन्ते नो प्रयोग छे। मुण्डकमां पण पहेलां आत्म प्राप्ति ना साधनों बताव्या छे अने तेपछी तरतज 'सत्यमेव जयते' नो प्रयोग छे। प्रश्न मांनुं आदित्यम् अभिजयन्ते अने मुण्डकमानुं सत्यमेव जयते आ बन्ने वाक्यो जे स्थितिमां आव्या छे तेमानी सरखामणी आपणे ध्यानमां लईए तो सत्यमेव जयते नो जे अर्थ अमे बताववामां आव्योछे ते विशे शक रही शके नथी।

उपरना बधा विवेचन माँ एवुं मनायुं नथीं के 'सत्यमेव जयते' ना 'सत्यनोज जय थाय छे' एवो अर्थ कयारेव थई शके नथी। ए वाक्यनो जो प्रकारण निरपेक्ष उपयोग कर्यो होय तो तेना तेवो अर्थ लेवामां कोई भूल नथी। ते अर्थ पण शास्त्रशुद्र छे तेथी अर्थनी ज्यां विवक्षा छे त्यां स्वतंत्र रीते ए वाक्यनो उपयोग कर्यो होय त्यां पण उपनिषदमां मलतो मूलनोज अर्थ कायम राखवो जोइए एवो आलेख लखवामां आग्रह नथी। आग्रह एटला पर तोज छे के मूल उपनिषदमांज ए अर्थ होवानु जे आज सुधी मनायुं छे ते योग्य लागतुं न थी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org